रात्री क्लास　　　　　　　　　　ओम् शान्ती　　　　　　　　　　3-1-1967

यह है भी अजब तमाशा। जैसे जिस प्रकार से बच्चे अजब तमाशा समझते है ऐसे और कोई की बुधी में नही है। यह दुनिया भी एक कलियुगी तमाशा है। यह है बेहद का तमाशा जो लाड़ले बच्चों की बुधी में है। एम आब्जेक्ट तो बुधी में है अगर ल.न्न. के मन्दिरमें जाते है तो भी महिमा वो ही करते है जो कृष्ण के आगे करते है। सर्वगुण सम्पन्न...सिर्फ मन्दिर अलग कर दिये है। यह नही जानते राधा कृष्ण ही फिर ल.न्न. बने है। कहते है कृष्ण द्वापुर में राम त्रेता में बाकी ल.न. को सतयुगमें दिखाते है। दुनिया तो कुछ समझने का ख्याल भी नही करती। बुधी में नही आता यह कब आये थे फिर कहाँ गये? क्या कोई से राज्य हराया? तो यह तमाशा तुम बच्चों की बुधी में अच्छी रीत बैठा है। इसको कुदरत नही तमाशा कहेंगे। कुदरत यह है कि इतनी छोटी स्टार कितना ऊंचा पार्ट भरा हुआ है। और खेल है अजब तमाशा। बुधी में आना चाहिये ना। हम नाटक कहते है परन्तु इनके आद मध्य अन्त को जानते है। सिर्फ नाटक कहने से फायदा थोड़ेई होता है। हम पार्ट बजाते है तो एक्टर होकर ड्रामा की आद मध्य अन्त को तो जानना चाहिये नां। यह तो बेहद का ड्रामा है। क्रिश्चन लोग यह थोड़ेई जानते होंगे क्राईस्ट फिर कितने दिनों बाद आवेगें। तुम बच्चों को सब मालूम है। मनुष्य सिर्फ कह देते है परमपिता परमात्मा ज्ञान सागर है। रचियता है। परन्तु कैसे क्रियेट करते है यह नही जानते। तुमको तो सब मालूम है। बाप रचियता भी है फिर पालना भी कराते है, विनाश भी कराते है। तो तुम सब जानते हो। भिन्न-2 सैन्टर्स पर जो भी सभी ब्रह्मा कुमार कुमारियां ब्राह्मण ब्राह्मणियां है उन सबको हक है बाप को पत्र लिखने का। बाबा तो कहते है बच्चे पत्र नही लिखते है। हर एक को समाचार देना चाहिये। कोई-2 सैन्टर्स में ब्राह्मणी ऐसी क्रेक हेड है जो कहती है हमारे हुक्म बिगर पत्र ना भेजो। ब्राह्मणियां ऐसे करती है जो छिपाना चाहती है। बच्चे खुश खैरियाफत तो भले लिखे। समाचार भी लिखें कई ब्राह्मणियां अपने को मियां मिठू समझती है यह समझती नही हम भूलें करती हैं। पोलाईट होकर नही चलती हूं। तो जिज्ञासु रूठ पड़ते। आना छोड़ देते है। कहती हैं हमारे बिगर पूछे बाबा को पत्र नां लिखो। इसलिये बाबा कहते है सब बच्चों को हक है बाप को पत्र लिखना। सब समाचार देना। ब्राह्मणि ठीक पढ़ाती है वा नही वा नवाबी दिखाती है, कोई डिससर्विस करती है तो समाचार देने से उसको सावधानी मिलेगी। अपना अकर्तव्य कर्म छिपाने से विकर्म हो पड़ेंगे। बच्चे हर प्रकार का समाचार दे सकते है। टीचर का भी समाचार दे सकते है। अज्ञान काल में भी टीचर की रिपोर्ट प्रिंसीपल को करते थे कि इनको बदली करो। यहां कभी बाबा पास ब्राह्मणी की रिपोर्ट आती है तो बहुतों को बदली भी कर देते है। या तो फिर यहां मंगायें बिठा देते है। यहां क्या नुकसान करेंगें। तो सब बच्चे समाचार दे सकते हैं। कोई में खामी हो वो अगर महारानी का बैठे खटिया पर बैठे चाय आद मांगें तो रिपोर्ट करो। अगर यहां जास्ती फुरसतों में मौज में रहेगी तो वहांपरकिशिरियानी बनेगी। माया है ना। नशे में ले जाती है। यहां मिस्रीकी साक की जाती है तो भी नशा चढ़ जाता है। सब बच्चों को हक है समाचार देने। सैन्टर चलाने वाली ब्राह्मणी से कई बच्चे भी होशियार होते है। वो जरूर समाचार देगें। नही तो वो हिल जाती है। फिर डिससर्विस हो जाती है। बाप कहते है मूल बात है याद की। समझाने में भी नशा चढ़ता है। तुम ऋषी हो। हठ योगियों को राज योग का बिलकुल पता नही है। गीता का भगवान कौन था? यह भी तुम ब्राह्मणों को पता है। और किसीको पता नही है। गीता में है भगवानोवाच कि देह के सब धर्मों को त्याग अपने को आत्मा समझो। तो पवित्र बन निर्वाण धाम में चले जावेंगें। इस श्रीमत के सिवाय कब भी कोई पावन बन मुक्ति धाम जा नही सकते। नां कोई गया है। सतयुग के पहले नम्बर वाले ही यहां है सबसे बड़ा मर्तबा इन ल.न. का है। श्रीलक्ष्मी हर होलिनेस श्रीनारायण हिज़ होलिनेस। यहां कोई हर होली नेस हिज़ होली नेस हो नही सकते। कोई को सम्पूर्ण निर्विकारी कह नही सकते। परन्तु यह लोग तो अपने को श्री-2 108 जगत गुरु कहलाते रहते है। इसलिये कहा जाता है अन्धेरी नगरी चरपट राजा.... परन्तु अपने चरपट, ईडियट, कोई समझते नही है। शिव बाबा कहते है सब ईडियट्स है। बाप को कोई नही जानते रचना की आद मध्य अन्त को भी नही जानते है। नां माना नास्तक। ईडियट, निडर होकर यह लिख सकते हो। ओम